'इतिहास' के भावी लेखकों के लिए दिशा-निर्देश

- शोध निबन्ध का विस्तार : 8000 से 10,000 शब्द
- लेखक-परिचय पाद टिप्पणी के रूप में निबन्ध के प्रथम पृष्ठ पर
- शोध निबन्ध का सार-संक्षेप : 200 से 300 शब्द, निबन्ध के प्रारम्भ में,
- शोध निबन्ध में प्रयुक्त फॉन्ट- कुर्तिदेव 10 तथा साइज 14 का रखें
- प्रस्तावित लेख की मूल प्रति पोस्ट द्वारा डॉ॰राजेश कुमार, उप-निदेशक, भारतीय इतिहास अनुसन्धान परिषद्, 35 फिरोजशाह रोड, नई दिल्ली-110001 को भेंजे
- शोध निबन्ध को ई-मेल से भी डॉ॰राजेश कुमार तथा कार्यकारी सम्पादक प्रो0 ईश्वर शरण विश्वकर्मा को भेंजे। ई-मेल का पता ad.res@ichr.ac.in तथा isvishwakarma@gmail.com
- विषय विशेषज्ञों द्वारा स्वीकृत होने पर ही शोध निबन्ध 'इतिहास' में प्रकाशित किए जाएंगे। अस्वीकृत निबन्धों को लौटाने का उत्तरदायित्व भारतीय इतिहास अनुसन्धान परिषद् का नहीं है
- विशेषज्ञों के सुझाव पर शोधार्थी को अपने शोध-निबन्ध में संशोधन करना अनिवार्य है
- प्रस्तावित शोध प्रबन्ध के विषय में विशेषज्ञ समिति का निर्णय अन्तिम माना जाएगा
- पाद टिप्पणी की शैली : लेखक का नाम, पुस्तक का नाम (इटेलिक), प्रकाशक का नाम, स्थल एवं वर्ष तथा अन्त में पृष्ठ संख्या :

  नर्मदा प्रसाद गुप्त, *बुन्देलखण्ड की लोकसंस्कृति का इतिहास,* (राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 1995), पृ. 124